K. Nand M.A 4th Sem's (1)

3

करण, रीति समन्वय, पारिवारिक परिवेश आदि की जानकारी प्राप्त की जाती है। इन सभी प्रकार की सूचनाओं को प्राप्त करने हेतु जरूरत के मुताबिक वैयक्तिक साक्षात्कार, सामूहिक साक्षात्कार, निरीक्षण आदि विधियों का उपयोग किया जाता है। इनके आधार पर प्राप्त सूचनाओं की सहायता से उस व्यक्ति विशेष का एक नैदानिक प्रारूप तैयार किया जाता है। इस पूरी प्रक्रिया को व्यक्ति मनोग्राफ (Individual Psychography) की संज्ञा दी जाती है। इस मनोग्राफ से ज्ञात होता है कि व्यक्ति विशेष या कर्मचारी विशेष में खास कार्य के लिए कौन-कौन सी योग्यताएँ किस-किस मात्रा में विद्यमान हैं।

व्यक्ति मनोग्राफीय विधि का उपयोग वाउलस (Bowlas), हैनरी (Henry), प्वाइनकेयर (Poincare) आदि मनोविज्ञानियों द्वारा विभिन्न अवसरों पर सफलता पूर्वक किया गया है जिसके परिणाम स्वरूप इसकी सार्थकता प्रमाणित होती है। इस विधि की प्रमुख उपयोगिता यह है कि इसके द्वारा कर्मचारी की ऐसी योग्यताओं का पता चलता है जिनके कारण वह अपने व्यवसाय में सफल प्रमाणित हुआ है। इस आधार पर उस व्यवसाय के लिए इसी तरह की योग्यताओं वाले नये व्यक्तियों का नियोजन करना संभव होता है।

दूसरी उपयोगिता यह है कि इस विधि के द्वारा इस बात की भी जानकारी मिल जाती है कि कार्य विशेष पर सफलता पाने के लिए कितनी मात्रा में कोई गुणशील या योग्यता अपेक्षित है।

कार्य विश्लेषण या व्यवसाय विश्लेषण की विधि के रूप में व्यक्ति मनोग्राफीय विधि का कुछ मनोविज्ञानियों द्वारा आलोचना करते हुए कहा गया है कि इस विधि का एक मौलिक दोष यह है कि यहाँ कार्य के बदले कार्यकर्ता का विश्लेषण किया जाता है। इस विधि में व्यक्ति की प्रधानता अधिक होती है और व्यवसाय की कम। साथ-ही-साथ इस विधि से यह ज्ञात नहीं हो पाता कि समान योग्यता होने के बावजूद कुछ व्यक्ति क्यों समान कार्य करने में कम सफल होते हैं।

(2) ~~व्यावसाय मनोलेखीय विधि (Job Psychographic Method)~~

इस विधि का प्रतिपादन ~~एक~~ वाइटल्स (Viteles, 1932) द्वारा व्यावसाय विश्लेषण हेतु किया गया। यह विधि इस अवधारणा पर आधारित है कि कार्य विश्लेषण के लिए तीन मानदण्डों का होना जरूरी है। अर्थात् मानसिक शीलगुणों का सरल वर्गीकरण, श्रेणीकरण के लिए एक मानक प्रविधि की आवश्यकता और प्रशिक्षित निरीक्षकों द्वारा कार्य क्रियाओं की प्रत्यक्ष जाँच की व्यवस्था होनी चाहिए। मानसिक शीलगुणों के अन्तर्गत शक्ति-निर्मुक्ति (energy discharge) एवं उसकी गति, बौद्धिक योग्यता, कौशल, निर्णय की क्षमता आदि आती है। वाइटल्स (Viteles, 1932) ने शक्ति निर्मुक्ति गति (energy discharge speed) की चर्चा करते हुए बताते हैं कि कुछ कार्य ऐसे हैं जहाँ उच्च शक्ति-निर्मुक्ति की आवश्यकता होती है और कुछ कार्य ऐसे होते हैं ~~को~~ जहाँ शक्ति की निम्न निर्मुक्ति (low discharge) की आवश्यकता होती है। इसी प्रकार समन्वय की चर्चा करते हुए बतलाते हैं कि किसी व्यावसाय को सफलतापूर्वक करने के लिए दृष्टि तथा पेशीयकार्यों के बीच समन्वय का होना आवश्यक है। उदाहरणस्वरूप टेलीफोन संचालक के लिए यह आवश्यक है कि वह प्लग को उचित स्थान पर ठीक-ठीक लगाने में सफल रहे। इस कार्य के लिए उसकी दृष्टि एवं पेशीयक्रिया में समन्वय आवश्यक है। निरीक्षण कार्य की चर्चा करते हुए वाइटल्स महोदय का कहना है कि कर्मचारी कार्य निष्पादन के सभी ब्यौरों पर पूरा-पूरा ध्यान दे सकने में पूर्णतः सक्षम हो सके जिसके लिए उसमें निरीक्षण हेतु पर्याप्त योग्यता का आवश्यक है। इसी प्रकार अन्य शीलगुणों का पर्याप्त मात्रा में होना आवश्यक है। व्यावसाय मनोलेखीय विधि इस अवधारणा पर आधारित है कि कार्य विश्लेषण में इन सभी योग्यताओं एवं शीलगुणों का सन्निहित होना जरूरी है।

व्यक्ति ~~[illegible]~~ मनोलेखीय विधि द्वारा कार्य विश्लेषण करते समय प्रत्येक शीलगुण या योग्यता का श्रेणीकरण पाँच बिन्दु मापनी (Five point scale) पर किया